International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No.1 Sept-Oct 2024

हरिशंकर परसाई के कथा साहित्य में राजनीतिक व्यंग्य

विक्रम सखाराम राजवर्धन
शोधार्थी, मु.वेतवडे, पो.साळवण,ता. गगनबावडा ,जि .कोल्हापूर
Corresponding Author- विक्रम सखाराम राजवर्धन
Email: vikisr6393@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.13951101

सारांश :

हरिशंकर परसाई जी के व्यंग कहानी को हम परखते है तो उनके सारी रचनाओं में दबे स्वर को उजागर करने का प्रयास उन्होंने किया है। उनकी जो भी व्यंग कहानी पढते है तो मतिष्क के हर कोने में एक अजिबसा अनुभव नजर आता है। हम एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करते है कि हमें वह दुनिया अपने ही पास है। लेकिन हम उससे बहुत दूर होते है जैसे उनकी एक रचना है जो 'चमचों कि दिल्ली यात्रा' जो समाज सुधारक से लेकर जनता के सेवक तक हर आदमी का चमचा होता है। यह बात बताई है। उनकी बहुत सारी कहानीयाँ है जो नाम से ही व्यंग्य का परिचय होता है। इस लिए 'व्यंग्यकार कन्हैयालाल नंदन का व्यंग्य के संदर्भ में वक्तव्य है कि "आज किसी भी रचना विद्या में व्यंग्य के बिना तराशा नहीं आ पाती। लेकिन शायद इसका एक जबरदस्त कारण यह है कि आज देश की जो स्थिति है उसका यही ढंग से अगर बयान किया जा सकता है तो वह व्यंग के माध्यम से ही हो सकता है।"

बीसवीं सदी में हरिशंकर परसाई जी के व्यंग विद्या ने बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। जो कि जातिवाद पाखंडवाद, नारिमुक्ति, राजनितिक, खोखलापन इन सभी पर एक दबाव बनकर रखा है। इस वजह हरिशंकर परसाई जी ने व्यंग्य विद्या का एक रचना हिंदी साहित्य में रखा है।

मूल शब्द: व्यंग्य, साहित्य, राजनीति, सटायर, आदमी, समाज, उपहास, घोषणा, खोखलापन, पाखंडवाद, भ्रष्टाचार, ईश्वर ।

प्रस्तावना:

व्यंग्य साहित्य का लेखन करना किसी सामान्य साहित्यकार का काम नहीं है। यह एक जिगरबाज और विवेक के पुजारी का काम है। व्यंग्य साहित्य लिखते हैं, तो कहना कुछ और होता है समझना कुछ और होता है। जैसे मराठी में एक कहावत है। 'लेकी बोले सुन लागे' माँ लड़की को डाटती है और बहू को वह बात हजम नहीं होती। इसी तरह व्यंग्य का भी है। "वस्तूत व्यंग्य रचना वह विधा हैं जिसमे तथ्य को सीधा न कहकर उसे घुमा फिरा कर कहा जाता है।"[1] आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी आधुनिक युग की सबसे सशक्त विधा व्यंग्य को मानते है। आदिकाल से आधुनिक काल तक की रचना को हम देखेंगे तो हर काल में हमें व्यंग्य मिलता है उसके प्रकार अलग-अलग है भक्ति काल में जो रचनाकार थे। वह अपने साहित्य में धर्म के पाखंड पर व्यंग्य लेखन करते थे जैसे कबीर दास लिखते हैं।

" काजी कौन कतेब बर्षाने
पढ़त पढ़त केते दिन बीते, गति एकै नहीं जानै। ॥ टेक ॥"

इसमें वह कहते हैं की कुरान पढ़ते-पढ़ते कितने साल बीत गए अल्लाह की गति या अल्लाह समझ नहीं आया अब तो आगे क्या समझेगा। तुम सुन्नत तो कर सकते हो लेकिन मेरा मन थोड़ी ही मानेगा या उसे स्वीकार करेगा। हरिशंकर परसाई 20 वीं सदी के कबीर लगते हैं क्योंकि कबीर ने धर्म के पाखंड पर कुल्हाड़ी चलाई इस तरह राजनीतिक पाखंड जब बढ़ता गया तब 20 वीं सदी में हरिशंकर परसाई जैसे व्यंग्य साहित्यिक का कलाम बोलने लगा और समाज को सुधारने का काम किया।

व्यंग्य का परिचय :

पाश्चात्य में 'सटायर' कि एक लंबी परंपरा हैं। इसी लिए उसपर प्रकाश डालना जरूरी हैं। 'पाश्चात्य में प्रथम सटायर का लेखन किया 'होरेस' ने जिसकी दो पद्य रचना मिलती है एक में 10 कविताएं है और दूसरे में कुल 8 हैं। अपने पूर्ववर्ती सटायर लेखक ल्यूसिलियस का जिक्र 'होरेस' ने किया है। जिसने लैटिन में सटायर लेखन को दिशा दी। उसके सटायर में मनुष्य की जिंदगी के व्यावहारिक पक्ष की आलोचना होती थी उसकी आलोचना प्रहारक एवं उपहासपूर्ण थी। प्रहार की कटुता में वह व्यक्ति तिलमिला उठता था जो उस सटायर का लक्ष्य बनता था। उसके बाद लिखे जाने वाले हर सटायर में एक तीखी मार की छटपटाहट अभिव्यक्ति पानी लगी।

होरेस के लेखन की एक विशेषता थी कि- हंसते हुए सत्य को कहने की। (To tell the truth laughing)

सटायर /व्यंग्य की पाश्चात्य परीभाषा :

मेरिडिथ ने ने व्यंग्य कार के बारे में लिखा है कि "व्यंग्यकार नैतिकता का ठेकेदार होता है। बहुदा वह समाज की गंदगी की सफाई करने वाला होता है। इसका कार्य इसका कार्य सामाजिक विकृतियों की सफाई करना होता है। (The satrist is a moral agent, often a social seavenger working ona storage of biles)[2]

"'सटायर' एक ऐसी गद्यात्मक या पद्यात्मक साहित्यिक कृति होती हैं, जो प्राय: मनोरंजन पूर्ण होता हैं, जिसमे दृढ़ता और मूर्खता की आलोचना होती हैं, और उसे उपहासात्मक बना लिया जाता हैं।" व्यंग्य का मूल अर्थ ही

उपहासात्मक आलोचना हैं, हसी भी हों और बाद में एक मस्तिष्क में झंजनाहट आए तो समझ लेना कि वह सटायर हैं।

"प्रसिद्ध व्यंग्यकार 'स्विफ्ट' ने लिखा हैं कि व्यंग्य एक प्रकार का शिशा हैं जिसमें देखनेवालों को अपने मुहँ के अतिरिक्त प्रत्येक मुहँ दिखाई देता हैं। यही कारण हैं कि विश्व में व्यंग्य का स्वागत किया जाता हैं तथा बहुत कम लोग जससे अपने को पीड़ित अनुभव करते हैं।

प्रो. सदरलैंड के अनुसार "व्यंग्यकार का कार्य न्यायाधीश की भाँति न्याय पालन कराने का है तथा शिष्ट समाज की मर्यादाओं की रक्षा करना है। उसका कार्य नर-नारियों को नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं अन्य कसोंटियों पर खरे उतरने के लिए सचेत करने का है।[3]

पाश्चात्य लोग जिसे 'सटायर' कहते है वहीं भारतीय साहित्य में व्यंग्य है भारतीय आचार्यो ने सटायर को हास्य के अन्तर्गत माना है। "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है जीवन की अलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।"[4]

भारतीय व्यंग्य की बात करे तो अमृतराय का मत है कि, "अच्छी व्यंग्य रचना पढ़कर आदमी कभी जोर से नहीं हँसता, बस एक हल्की-सी ढेढी-सी, जहरीली-सी मुस्कराहट उसके होंठों पर आ जाति है।"

"श्री बेढब बनारसी ने कहा है कि, "जब किसी व्यक्ति या समाज की बुराई या न्यूनता को सीधे शब्दों में न कहकर उल्टे या टेढ़े शब्दों में व्यक्त किया जाता है तब व्यंग्य की सुष्टि होती है।"[5]

राजनीतिक व्यंग्य का परिचय

राजनीतिक व्यंग्य की परिभाषा को समझने का सबसे अच्छा तरीका पहले शब्दों का स्वतंत्र रूप से परीक्षण करना है। राजनीतिक शब्द को आम तौर पर सरकार और सार्वजनिक नीति से संबंधित किसी भी चीज़ के रूप में समझा जाता है; आम तौर पर, राजनीति शब्द उन समूहों या व्यक्तियों को संदर्भित करता है जो दूसरों पर सत्ता में हैं, साथ ही वे विकल्प भी चुनते हैं जो वे संसाधनों को वितरित करने और कानून स्थापित करने में चुनते हैं। अंतर्निहित सत्य या अन्याय को उजागर करने के लक्ष्य से किसी व्यक्ति या वस्तु का मज़ाक उड़ाने के लिए हास्य या अतिशयोक्ति का उपयोग व्यंग्य है।

जैसे कहा जा सकता है कि राजकिय सत्ता के ठेकेदार या लोकतंत्र के नेताओं के बारे में उनके काम के सेवा के बारे में उपहात्सात्मक टिपण्णी करना उन्हें टोकना और सिधी रह दिखाना यहीं राजनीतिक व्यंग्य है। राजनीतिक व्यंग्य कि परंपरा कार्टुन में बहुत बड़ी मात्रा में है।

मेरे मत से राजनीतिक व्यंग्य का मतलब यह है कि सत्ता के या लोकतंत्र में जो दमण होता है उसके उपर जो उपहासात्मक लेखन या चित्र के माध्यम से जो लिखा जाता है, टिपण्णी की जाति है उसे राजनीतिक व्यंग्य कहा जाता है।

भारतीय और पाश्चात्य सटायर (व्यंग्य) का विचार करते है तो ध्यान में आता है कि टेडी उँगली से घी निकालने जैसा है। याने हम उपहासात्मक, नींदा से कुछ टिप्पणी करे या किसी घटना का साहित्यकार अलोचना करता है, जो समाज के हित के लिए नीतिपरक हो और अच्छा बदलाव लाए।

"यदि हिंदी के विभिन्न युगों के समाज, सामाजिक मूल्यों, प्रतिष्ठान के स्वरूप और मानवीय पीड़ा को समझना होता जिन साहित्यकारों का उल्लेख किया जा रहा है जो कि व्यंग्य के माध्यम से अपना लक्ष्य प्राप्त करते हैं तो वे है कबीर, भारतेंन्दु, हरिश्चन्द्र, बालमुकुन्द गुप्त, निराला तथा हरिशंकर परसाई।"[6]

हरिशंकर परसाई हिंदी के ऐसे व्यंग्य रचनाकार है जिन्होंने साहित्य में व्यंग्य को विधा का दर्जा दिया। हरिशंकर परसाई ने अपने कलम से बीसवी सदी में सरकार पर समाज के सभी स्तंभों पर नजर जमाई रखी है और व्यंग्य के माध्यम से वह प्रहार करते है, जो समाज के विकास में भारी योगदान रहा है।

इन्ही के साथ हिंदी साहित्य में बाबू बालमुकुंद गुप्त, चंद्रधार शर्मा गुलेरी, शरद जोशी, के.पी.सक्सेना, आलोक पुराणिक, ज्ञान चतुर्वेदी यह भी व्यंग्य लेखक है लेकिन हरिशंकर परसाई की तो कलम इनसे आगे निकली है।

बीसवी सदी में भारत का स्वतंत्र्य होना सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उथल पुथल हो रहा था। भारत स्वतंत्र्य होकर अपने विकास की यात्रा शुरू हो गई थी। उसी वक्त हरिशंकर परसाई अपने साहित्य में समाज का चित्रण उतार रहे थे। हरिशंकर परसाई ने राजनीतिक व्यंग्य बहुत किया है। जो सरकार और सार्वजनिक घटनाओं के पहलु की आलोचना कि है। उनके अगर हम कहानियाँ देखेंगे या उनके नाम सुनेंगे तो राजनीतिक व्यंग्य की कितनी बड़ी आलोचना है वह ध्यान में आती है। जैसे ठिठुरता हुआ गणतंत्र, दो नाक वाले लोग, न्याय का दरवाजा, प्रजावादी, समाजवादी पर राजा भूखा था, पुलीस मैत्री का पुतला, बकरी पौधा चर गई, बुद्धिवादी, बैरंग शुभकामना और जनतंत्र, भारत को चाहिए जादूगार और साधू, भोलाराम का जीव, महात्मा गांधी को चिट्ठी पहुँये लोकतंत्र कि नौटंकी, साहित्य के अमृत-घर में राजनिति का घासलेट, हम बिहार में चुनाव लड रहे है, सदाचार का ताविज, व्यवस्था के चुहे से गांधीजी की शॉल, अन्न की मौत, भारतीय राजनिति का बुलडोजर दस दिन का अनशन, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, कबिर का स्मारक बनेगा। संसद और मंत्री कि मूँछ अनुशासन, समाजवादी चाय, इन कथाओं के नाम से ही हमें व्यंग्य की गहराई पता चलती है। इसलिए क्रांतिकुमार जैन 'काग भगोडा' किताब की भूमिका में परसाई के बारे में लिखते है। "परसाई एक खतरनाक लेखक है, खतरनाक इस अर्थ में कि उन्हें पढ़कर हम ठीक वैसे ही नहीं रह जाते जैसे उनको पढ़ने के लिए होते है। वे पिछले तीस वर्षो के हमारे राजनितिक-सांस्कृतिक जीवन के यथार्थ के इतिहासकार है। स्वतंत्रता के बाद के हमारे जीवन मूल्यों के विघटन का इतिहास जब भी लिखा जायेगा तो परसाई का साहित्य संदर्भ सामग्री का काम करेगा।"[7]

हरिशंकर परसाई के कहानी साहित्य में राजनैतिक व्यंग्य

परसाई जी ने लगभग 350 कहानी लीखी है। आझादी के बाद पुँजीवादी, आर्थिक, सामाजिक भारतीय परिवेश, कुंठा, विद्रोह, आक्रन्तता जैसे प्रवृत्ति ले त्रस्त लाचार आम इन्सान की होसला अपनी कहानी या साहित्य के माध्यम से बड़ाने का काम किया।

'गांधीजी की शाल' इस कहानी में हरिशंकर परसाई बहुत अच्छा व्यंग कसाते है, जो गांधीजी ने एक सेवक को शाल भेट दि थी और वह सेवक अपने जीवन भर एक भी सभा छोडता नहीं की वह शॉल लेकर न जाए और भाषण न करे। हरिशंकर परसाई की इस कहानी में जो नेता के दूर दूर के जान पहचान के लोग होते है उनकी मनोविश्लेषण किया है जो एक बर मिलते है और वही तस्वीर आज कल अपने मोबाईल के फेसबुक, व्हॉटसप पर रखते है और बड़पन दिखाते है।

उसी तरह 'गांधीजी की शाल' कहानी का सेवक है जो गांधीजी ने दी हुई शाल चोरी होने के बाद वह सार्वजनिक जीवन से सन्यास लेने कि बात करते है। लेकिन सभाओं में जाने कि लत जो लगी होती है वह नहीं छुटती है। नेताओं का भी वैसा ही है कि 'मर जाऐंगे पर खुर्ची नहीं छोडेंगे, माईक नहीं छोडेंगे वैसा ही सेवक है जो शाल चोरी होने के बाद नई शाल लाता है और सभा में जाता है।

"पर अब क्या करें? वे पुरे जोर से सोच रहे थे। शाल जीवन-शक्ति ही ले गया। अब किस लिए जियें? जियें तो क्या करें क्या? ऐसे जीने से मर जाना अच्छा! पर वे मरे नहीं। एक विचार उनके मन में सहसा आया और उसके अवेग से वे खड़े हो गए। चपल पहनी और दूर सदर के कोने में कपड़ों की एक दुकान पर गए। शाल की किमत पूछी। मन में शंका उठी-क्या यह मिथ्याचार नहीं है? समाधान कर लिया वस्तू सत्य नहीं है, भावना सत्य है। शाल खरीदकर सेवक जी घर आये। अब समस्या खड़ी हुई इसका नयापन कैसे मिटे? सेवक जी ने उसे पानी में डुबाकर सुखाया उस से फर्श साफ किया, दो-तीन दिन उसे ओठकर सोते रहे। तरह –तरह के अत्याचार से उसकी चमक कुछ कम हो गयी। सेवक जी ने उसकी तहें करके उसे पुराने शाल के स्थान पर रख दिया। अब मन कुछ हलका हो गया, प्रफुल्लता लौट रही थी। पर ज्यों ही वे प्रसन्न होते, आशंका कुद पड़ती- कहीं लोग समझ न जाये? वे किसी तरह आशंका को शान्त करते, कि ग्लानि सिर उठाती- यह मिथ्याचार है। वे ग्लानी को पुकारते-वस्तु सत्य नहीं है, भावना सत्य है।

शाम की सभा की घोषणा हो चुकी थी सेवक जी कहीं दिनों के बाद आज सभा में जाले कि तैयारी कर रहे थे। पेटी से खादी के कुरता-धोती निकाल कर पहने, आलमारी से शाल निकाला और ओढ़ा फिर पश्न उठा-यह मिथ्याचार है। जवाब दुसरे कोने से उठा वस्तु सत्य नहीं है, भावना सत्य है।

सेवक जी मंचपर बैठ गए। धुक धुकी लगी- कहीं कोई भेद ना जान ले? कोई सहज ही देखता। वे सोचकर काँप जाते कि इसने शाल का रहस्य भाँप लिया है। बड़ी बेचैनी थी। अन्तिम वक्ता के बाद वे खड़े हुए और बोले, "मुझे भी इस विषय पर दो शब्द कहना है।" उन्होंने माइक का डण्डा पकड लिया। दिल धडक रहा था और हाथ काँप रहे थे। आज पैरों को स्थिर रखने का प्रयत्न करना पड़ रहा था। बोलना शुरू किया-".....मैंने जो कुछ भी सीखा है, पुज्य गांधीजी के चरणों में बैठकर वे मुझे पुत्रवत स्नेह करते थे। मेरे विवाह के अवसर पर यह शाल उन्होंने मुझे दिया था। बापू स्वयं।"

पहली पंक्ति में बैठा एक आदमी उठकर खडा हो गया और बोला क्योंझूठ बोलते है सेवक जी? यह शाल तो बिलकुल नया है और मिल का है। भला गांधीजी मिल का शाल देते?

सभा में हँस उठी, कोलाहल हुआ, सेवक जी के पाँव डगमगायें मुठ्ठी ठीली होकर माइक के डण्डे पर से फिसलने लगी और वे वही बैठ गये।[8]

आज हमारे देश में जो गणतंत्र के सेवक है वह इस सेवक की कोटी में ही आते है जो आझादी के पहले का कोई उदाहरण देकर हमें फसा रहे हैं।

'सदाचार का तावीज'

राज्य में फैले भ्रष्टाचार को राजा मिटाना चाहता है। दरबारियों की सभा बुलाते है और भ्रष्टाचार मिटाने की बात करते है। फिर 'विशेषज्ञों' को बुलाकर पाँच विशेषज्ञों को भ्रष्टाचार उडने का काम सौपा जाता है। वह काम पे लगते है।

"दो महिने बाद वे फिर से दरबार में हाजिर हुए। राजा ने पूछा - 'विशेषज्ञों, तुम्हारी जाँच पुरी हो गयी।"

'जी, सरकार।"

क्या तुम्हें भ्रष्टाचार मिला?"

"जी बहुत-सा मिला।"

राजा ने हाथ बढाया "लाओ, मुझे बताओ। देखू कैसा होता है।"

विशेषज्ञों ने कहा, हुजूर, वह हाथ की पकड में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है, अगोचर है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है उसे देखा नही जा सकता है।"

राजा सोय में पड गये। बोले विशेषज्ञो तुम कहते हो कि वह सूक्ष्म है, अगोचर है और सर्वव्यापी है। ये गुण तो ईश्वर के है। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?"

विशेषज्ञों ने कहा-"हाँ महाराज अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।"

एक दरबारी ने पूछा, "पर वह है कहाँ? कैसे इस भवन में है। वह महाराज के सिंहासन में है।"

"सिंहासन में है?" कहकर राजा साहब उछलकर दूर खडे हो गये।

विशेषज्ञों ने कहा, "कहाँ सरकार, सिंहासन में है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के जिस बिल का भुगतान किया गया है, वह बिल झूठा है। वह वास्तव से दुगने दाम का है। आधा पैसा बीच वाले खा गये। आपके पुरे शासन में भ्रष्टाचार है और वह मुख्यत: धुस के रूप में है।"

विशेषज्ञों की बात सुनकर राजा चिन्तित हुए और दरबारियों के कान खडे हुए। राजा ने कहा, "यह तो बडी चिंता की बात है। हम भ्रष्टाचार बिलकुल मिटाना चाहते है। विशेषज्ञों, तुम बना सकते हो कि वह कैसे मिट सकता है।

घुस ने हमारे देश खोकला बनाया है जो गाँव से दिल्ली तक उसकी लकीर है। जो एक दूसरे से मिली हुई है।"

विशेषज्ञ योजना तो बनाते है लेकिन वह दरबारियों को मुसिबत लगती है और वह बात वही रोकी जाती है। कुछ दरबारी उस योजना जलाने कि बात करते है।

एक दिन दरबारी एक साधु को दरबार में लाते है और कहते है कि इन्होंने बडी तपस्या कि है। और इन्होंने सदाचार का ताविज बनाया है। जो कंधेपर बाँधने से मनुष्य बेइमानी नहीं करता यह बात सुनकर राजा खुश हुए और दरबारी के कहने पर ताविज का ठेका साधु को दिया जाता है। इतना ही नहीं उस साधु को पाँच करोड रुपये कारखाना खोलने के लिए पेशगी मिल गये।"[9] आज कल की हमारा भारत की अगर राजनैतिक, सामाजिक स्थिति का अध्ययन करेंगे तो हरिशंकर परसाई के हर व्यंग की अनुभुती हम पा सकते है। जो भी सत्ता के ठेकेदार है वह अपने ही आसपास के दलालों को ठेका देने का काम करते है जो रास्ता हो, सरकारी योजनाएँ हमे या किसी दफ्तर के कारागिरों का ठेका हो वह सब अपने अपने दलालों और चमचे को ही दिए जाते है।

हरिशंकर परसाई का व्यंग रचना जो है वह कालजयी रचना है। पचास साठ वर्ष पूर्व लिखा हुआ व्यंग्य आज भी वैसा का वैसा राजनैतिक चित्रण हमें दिखाई देता है।

संदर्भ

1. हरिशंकर परसाई व्यंग्य कि वैचारिक पृष्ठभूमि, प्रो . राधेमोहन शर्मा (भूमिका प्रकाशन)
2. हरिशंकर परसाई व्यंग्य कि वैचारिक पृष्ठभूमि प्रो . राधेमोहन शर्मा (भूमिका प्रकाशन)
3. हरिशंकर परसाई व्यंग्य कि वैचारिक पृष्ठभूमि प्रो . राधेमोहन शर्मा (भूमिका प्रकाशन)
4. हरिशंकर परसाई व्यंग्य कि वैचारिक पृष्ठभूमि प्रो . राधेमोहन शर्मा (भूमिका प्रकाशन)
5. हरिशंकर परसाई व्यंग्य कि वैचारिक पृष्ठभूमि प्रो . राधेमोहन शर्मा (भूमिका प्रकाशन)
6. हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्गचेतना ,कु. आभा भट्ट (जयभारती प्रकाशन सन 1994)
7. काग भगोडा, हरिशंकर परसाई ,(वाणी प्रकाशन सन 1983)
8. सदाचार का ताविज ,हरिशंकर परसाई ,(भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन सन 1985)
9. सदाचार का ताविज, हरिशंकर परसाई ,(भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन सन 1985)